A CONVERSATION ON RELIGIOUS SUBJECTS.

धर्म्म वार्त्ता।

जो नार्थ इण्डिया ट्राक्ट सुसैटी की
आज्ञा अनुसार

—:○:0:○:—

मिरजापूर

आरफ़न इसकूल प्रेस में पादरी ह्यूलट
साहिब के यत्न से छापी गई
सन १८७४ ई०

[दूसरी छपाई ५०००] [दाम एक पैसा]

धर्म्म वार्त्ता।

दोहा॥
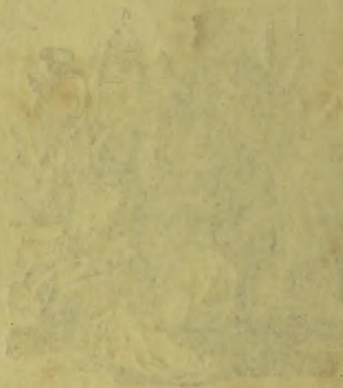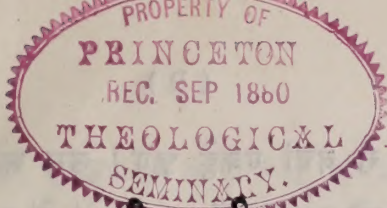
भाव सरस समझत सबै भले लगें यह भाय।
जैसे औसर की कही बानी सुनत सुहाय॥

पुस्तक लिखने का कारण॥

एक दिन ऐसा हुआ कि मैं खोजपुर गांव में धर्म्म उपदेश करने को गया। गांव के चौपार के पास मैं ने कई एक पुरुषों को बातचीत करते देखा और वहां एक बनिये की दूकान भी थी जिस पर लोग सौदा ले रहे थे। बनिये ने प्रणाम कर मेरे लिये पीपल की छांह में चारपाई डाल दिई और जब म उस पर बैठके मुक्ति का मंगल समाचार सुनाने लगा तब बहुत लोग गांव की चारो

2nd Edition,
5,000 Copies.

ओर से वहां एकट्ठे हुए। उस समय इस भांति की बहुत बातें हम लोगों में हुईं जिन्हें मैं लिखता हूं जिसतें औरों को भी लाभ होवे और जैसा उन्हों ने कान धरके सुना वैसाही आप लोग चित्त लगाके पढ़िये॥

प्रचारक का वचन॥

हे प्यारे लोगो स्वर्ग और पृथिवी का स्वामी ईश्वर है। उस की महिमा समझ से बाहर है॥

चौपाई॥

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी बक्ता बड़ जोगी॥
तन बिन परस नैन बिन देखा।
यहै घ्रान बिनु बास अशेखा॥
अस सब भांति अलौकिक करनी।
महिमा जासु जाइ नहि बरनी॥

उस की इच्छा से सारी वस्तुं उत्पन्न हुईं और उसी ने सब वस्तुओं को इस प्रयोजन से रचा कि अपनी ईश्वरता और महिमा और विभव को प्रगट करे और प्रत्यक्षरूप से देखा जाता है कि सब वस्तु परमेश्वर की इस इच्छा को पूरा करती हैं। देखो वे सब किस तरह से परमेश्वर की मनशा के अनुसार अपने अपने कामों को कर रही हैं। सूर्य्य गरमी और प्रकाश देता रहता और चंद्रमा और तारे रात को चमकते हैं। कूए के जल पीने से तुम्हारी प्यास बुझ जाती और उस रोटी से जो तुम्हारे खेतों के अन्न से बनती तुम्हारी भूख मिट जाती है। बैल मनुष्य की गाड़ियों को खींचते और हल भी जोता करते हैं। गाएं तुम्हारे लिये दूध देती हैं। घोड़ा हाथी ऊंट खच्चर ये सवारी का काम देते और बड़े बोझों की ढुलाई करते हैं। घास जो खेतों में उपजती है इन सब जानवरों के लिये भोजन

होता और पवन से सब सांस लेते और जीते हैं। इस रीति से जिस अर्थ के लिये जो वस्तु उत्पन्न हुई तिस अर्थ के अनुसार वुह सृष्टिकर्त्ता की इच्छा को पूरा करती है। पर सृष्टि के एक रचना की दशा और ही है अर्थात मनुष्य जिस के लिये पृथिवी रची और संवारी गई थी वुह तो अपने सृजनहार की इच्छा पूरी नहीं करता। वुह उस पेड़ के समान है जिसे कोई फल खाने की लालसा से लगावे और वुह कुछ भी फल न लावे और लगानेहार अप्रसन्न हो आज्ञा देवे कि उसे काट डालो उस ने बृथा ही भूमि रोक रक्खी है। परमेश्वर ने ऐसी रीति से मनुष्य को सुफल लाने के लिये सृजा॥

दोहा॥

तुलसी काया खेत है मनसा भयौ किसान।
पाप पुन्य दोऊ बीज हैं बवै सो लुनै निदान॥

उस ने मनुष्य को अपने गुण और स्वभाव के प्रकाश करने के लिये उत्पन्न किया पर उस को चाल चलन सृजनहार को लज्जाती है तो वुह कैसे आश्चर्य्य की बात है कि जो सकल सृष्टि में उत्तम और प्रधान है सो अपने बनानेहार के काम नहीं आता और जो जड़ जीव और जड़ वस्तु हैं सो अपने कर्त्ता के मनोरथ को पूरा करते हैं। इस का यह कारण है कि इस जगत में पाप हुआ है और पाप के मारे मनुष्य बिगड़े और भ्रष्ट हुए हैं। कहते हैं

अरल ॥

यह दुनिया बाजीद पलक का पेखना।
यामें बहुत बिगार कहो क्या देखना॥
सब जीवन का जीव जगत आधार है।
परहां बाजीदा जो न भजे भगवन्त हठी में क्षार है॥

पाप तो लोगों के मन में पैठ गया और सृष्टि को सृष्टिकर्त्ता से भटकाया है। पाप के हेतु

दुख क्लेश विपत्ति जगत में आई हैं। पाप ही से कष्ट पीड़ा और संकट लोगों पर पड़ते हैं। बहुत स्त्री पुरुष अंधे लूले लंगड़े कोढ़ी विधवा माता पिता हीन जो होते यह भी पाप का फल है। दरिद्री कंगाल होते सब के सब नाना प्रकार से दुःख सागर में डूब गये हैं। कितने लोग यह समझते हैं कि जो धनवान हैं सो अपने धन संपत्ति के द्वारा आनन्दित और संतुष्ट होंगे पर यह बड़ी भूल है। धनी भी दुःखी होते हैं क्योंकि द्रव्य के बटोरने में और उस की रक्षा में उन को सब प्रकार का क्लेश चिन्ता और भय होते हैं। वे कभी आनन्द से नहीं रह सक्ते क्योंकि यह खटका नित्य रहता है कि कदाचित हमारी संपत्ति खो जाय अथवा कोई उसे चुरा लेवे॥

दोहा॥

बहुत द्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय।
कांसे ऊपर बीजुरी परत कहत सब कोय।

बड़े बड़े लोगों को भी सुख नहीं मिलता है इस लिये कि जब उन की सारी इच्छा पूरी होती अथवा होने पर है वे मर जाते हैं। एकाएक इस जगत को छोड़कर परमेश्वर के सन्मुख खड़ा होना पड़ेगा॥

दोहा॥

खर्ब खर्ब लों द्रव्य है उदय अस्त लों राज।
तुलसी जों निज मरन है आवे कौने काज॥

नंगे जैसे आये तैसे वे चले जाते हैं और न धन न भूमि न घर न परिवार और न कोई प्रिय वस्तु जो उन को थी एक भी उन के संग न जायगी। पाप ही के कारण मनुष्य की ऐसी दुर्दशा है॥

वादी का वचन॥

आप सत्य कहते हैं पर पाप पुण्य दोनों ईश्वर की ओर से हैं। ईश्वर से सब कुछ होता

है और उस की इच्छा बिना एक पत्ती भी नहीं हिलती है ॥

प्रचारक का बचन ॥

नहीं भाई ऐसा न कहो। परमेश्वर किसी प्रकार से पाप का न करनेवाला न करानेवाला है। पाप तो केवल मनुष्य के दुष्ट स्वभाव से होता है ॥

बादी का बचन ॥

जो पाप परमेश्वर से नहीं है तो निश्चय जाना जाता है कि उस का रचनेहार कोई दूसरा है जो ईश्वर स सामर्थी होगा ॥

प्रचारक का बचन ॥

ऐसा तो नहीं है जैसा तुम समझते हो। क्या तुम पाप और पुण्य का भेद नहीं जानते हो। पुण्य क्या बस्तु है। पुण्य यह है अर्थात ईश्वर की आज्ञाओं के समान चलना। और पाप क्या है। अपने मन की बुरी इच्छाओं

के अनुसार काम करना यही पाप है। जैसे कि कोई चोर पकड़ा जावे और हाकिम के साम्हने खड़ा हो यों क्षमा मांगे कि हे साहिब मैं ने आप से आप चोरी नहीं किई न ऐसी बात कधी मेरे मन में आई परन्तु आप ने मुझ से चोरी करवाई। क्या हाकिम ऐसा उत्तर सुनके उस को दूना दण्ड न देगा कि वह न केवल चोरी करके अपराधी ठहरा परन्तु यह भी बुरा किया कि हाकिम पर झूठा दोष लगाया। अपने अपराधों का दोष ईश्वर पर लगाना महा पाप है। जो वुह किसी से पाप करवाता तो वुह पाप का दण्ड किस रीति से दे सक्ता॥

बादी का वचन॥

यह सब सत्य है परन्तु परमेश्वर ने स्वर्ग को धर्म्मियों के लिये और नरक को अधर्म्मियों के लिये बनाया है और चाहता है कि दोनों भरे जावें॥

प्रचारक का वचन॥

नहीं भाई कधो ऐसा न कहो। यह मिथ्या है। नरक का भरना ज़रूर नहीं है। परमेश्वर उस को भरना नहीं चाहता बरण इस के विरुद्ध वुह यह चाहता है कि सब लोग मुक्ति को प्राप्त करें जिस तरह जब कोई राजा अपने देश के बंदीगृहों को देखने जाता और सभों में बहुत थोड़े बंधुए पाता तो प्रसन्न हो कहता है कि मेरे देश के लोग कैसे भले और सुकर्मी हैं पर जब बंदीगृहों को भरा हुआ पाता तो अप्रसन्न हो कहता कि हमारी प्रजा कैसी दुष्ट और कुकर्मी है॥

परमेश्वर हमारा सृजनहार और पालनकर्त्ता है। क्या कोई अपने पुत्र को आनन्द से दण्ड देगा। जो मारना हो तो मारेगा तौभी क्या पिता को इच्छा न होगी कि पुत्र ऐसी चाल चले कि मारने के योग्य न होवे। क्या परमेश्वर दयाल और कृपाल पिता नहीं है। क्या

कोई पिता संसार में ऐसे दया अपने बालकों पर कर सक्ता जैसा परमेश्वर मनुष्य पर दिखाता है ॥

बादी का बचन ॥

हां ईश्वर भगवान दयाल और कृपाल है और बिना उस की इच्छा कुछ नहीं होता इसी से प्रगट है कि पाप का कर्त्ता वुही है ॥

प्रचारक का बचन ॥

ऐसा दुर्बचन मत कहिये। इस में ईश्वर की निन्दा होती है। क्या तुम्हारे गांव में मीठे जल का कोई कूआं है ॥

बादी का बचन ॥

हां बहुत अच्छे जल का कूआं है ॥

प्रचारक का बचन ॥

क्या ऐसी बात तुम्हारे देखने में आई है कि उस कूए का जल कभी मीठा कभी खारी निकलता है ॥

वादी का बचन ॥

नहीं ऐसा तो कभी नहीं हुआ होगा ॥

प्रचारक का बचन ॥

तो फिर परमेश्वर जो धर्म्म और पुण्य का सोता है उस से पाप की उत्पत्ति कैसे होवे। आरंभ में परमेश्वर ने मनुष्य को पवित्रता और शुद्धता की दशा में उत्पन्न किया इन सब बातों के विषय में उस ने उस को अपने समान बनाया और वह अब लों चाहता है कि हम उस की पवित्र रूपी महिमा को प्रगट करें और न्याय और धर्म्म से संसार पर राज्य करें। और जब लों आदि पुरुष अर्थात आदम पवित्र और धर्म्मी बना रहा तब लों परमेश्वर का तेज और महिमा प्रगट होती थी जिस रीति से कि जब हम निर्मल जल का भरा हुआ लोटा धूप में रखते हैं तो सूर्य्य का रूप जल में बहुत ही साफ दिखाई देता है परन्तु उसी लोटे में जो हम कीचड़ भर देवें तो सूर्य्य का रूप साफ

नहीं देख पड़ेगा। मनुष्यों के अंतःकरण की ऐसी ही दशा है। मैला और अशुद्ध और पाप की कीचड़ से भरा हुआ ईश्वर का तेजोमय रूप उन में दिखाई नहीं देता परन्तु कितनों के मन में उस का विरोधी शैतान अर्थात दुष्टआत्मा की मलीनता देख पड़ती है। हम पाप करते और पाप का फल अर्थात दुःख और क्लेश पाते हैं॥

दोहा॥

करै बुराई सुख चहै कैसे पावे कोइ।
रोपै पेड़ बबूल को आम कहाँ ते होइ॥

वादी का वचन॥

नारायण ने सब कुछ उत्पन्न किया है और वुह सब मनुष्यों और सब वस्तुन में व्यापक है और जो कुछ होता है सो उसी से होता है और हुआ और होगा। प्रानियों से कुछ भी नहीं होता है॥

प्रचारक का बचन।

वाह। क्या आप पंडित होके ऐसी अज्ञानता की बातें बोलते हैं। परमेश्वर सब वस्तुन में कहां व्यापक है। क्या कर्त्ता और कर्म्म में कुछ अंतर नहीं है। देखिये मेरे पांव में जूतियां हैं तो जो मैं कहूं कि मेरे पांव में मोची है क्या सब लोग मुझ को बावला न समझेंगे। यह बस्त्र जो मैं पहिने हूं दरज़ी का सिया हुआ है। क्या दरज़ी को मैं पहिने हूं। यह कैसी मूर्खता है। मोची और दरज़ी अपनी बनाई हुई वस्तु में व्यापक नहीं हैं। और वैसाही परमेश्वर अपने कर्म्मों में व्यापक नहीं है। यह जो तुम कहते हो कि परमेश्वर पाप पुण्य सब कुछ करता और मनुष्य कुछ नहीं कर सक्ता है सो बड़ी भूल की बात है। परमेश्वर पाप से घिनाता है उस की आंखें पवित्र हैं यहां लों कि वह बुराई को देख नहीं सक्ता। जैसे कोई पुरुष जो शुद्धता को

बहुत चाहता हो किसी गांव में जाता है और वहां बहुत कूड़ा कर्कट देख घिणकर मुख फेर लेता है वैसाही परमेश्वर पापियों के मन की मलीनता को देखकर उसे घिनौना जानता और उस से क्रोधित होता है। इस कारण बड़ी सोच की बात यह है कि मनुष्य का मन जो भांति भांति की मलीनता से भरा हुआ है किस रीति से शुद्ध किया जायगा॥

दोहा॥

सुधरी बिगड़ै बेगही बिगड़ी फिर सुधरै न।
दूध फटै कांजी परै सो फिर दूध बनै न॥

हम अपने आत्माओं को कैसे पवित्र कर सकेंगे॥

बादी का बचन॥

हम गंगा में नहाते हैं गंगाजल का बड़ा महातम है उस के जल से सब पाप छूट जाते हैं॥

प्रचारक का बचन॥

नहीं बाबा जी। गंगाजल पाप को धो नहीं सक्ता है। पाप की उत्पत्ति तो मन ही से होती है और गंगाजल मन में पहुंचता भी नहीं है। एक दृष्टांत सुनो। किसी के पास बनात का एक मैला टुकड़ा था उस ने उसे धोबी को धोने के लिये दिया परंतु धोबी ने बनात को कभी नहीं धोया था और यों बिचार कर कि कदाचित मुझ से कुछ बिगड़ जाय उस ने बनात को कपड़े में लपेटके और एक पेटी मे बंद करके और उस में ताला लगाके नदी में धोने को ले गया वहां उस ने पेटी के ऊपर साबुन लगा पानी डाल उसे बहुत मलके धोया यहां लों कि पेटी के ऊपर मैल का नाम भी न रहा। क्या तुम जानते हो कि बाहर के मैल धोने से भीतर की बनात कभी उजली हो गई होगी। कभी नहीं। उस का मैल जैसे का तैसा रहा क्योंकि जल और साबुन उस के पास

पहुंचे भी नहीं। यहीं तुम्हारी दशा है कि तुम जो ब्राह्मणों की बात मानके गंगा में नहाते हो सो तुम्हारा तन पवित्र होवे तो होवे पर ऐसी ऊपरी बातों से मन को पवित्र करना अनहोना है। और जब तुम गंगा नहा चुके तौभी तुम्हारे मन जैसे आगे थे वैसेही अशुद्ध बने रहते हैं॥

वादी का बचन॥

ईश्वर के नाम जपने और दान पुण्य करने से हमारे पाप दूर हो जाते हैं और हमें मुक्ति प्राप्त होती है॥

प्रचारक का बचन॥

तुम अभी कह चुके हो कि इस गांव में अच्छे जल का कूआं है। तुम ने बरसों से उस का जल पिया होगा और वुह सदा मीठा था। जानो कि एकाएक उस के जल में दुर्गंध निकलने लगी। पहिले यह विचार करके कि कदाचित यह दुर्गंध बरतन के कारण हो तुम

दूसरे बरतन में जल भर लाओगे पर तौभी वुही हाल रहता है। तब गांव के सब लोगों पर प्रगट होगा कि जल ही बिगड़ गया है और सब कहेंगे कि यह निश्चय कूए के कारण है सो कोई जन कूए में पैठके देखता क्या है कि जल में सड़ा हुआ कुत्ता पड़ा है। बस सब लोग कूए को अपवित्र जानके उस का जल पीना छोड़ देंगे। तब तुम कूए को शुद्ध करवाओगे और सब मैले जल को निकाल फेंकवा देओगे और बहुत दिन के पीछे उस का जल पीओगे। बात यह है कि वुह जल पहिले अच्छा था पर उस सड़े कुत्ते के मारे वुह बिगड़ गया और इसी रीति से तुम्हारी सर्ब पूजा पाठ और दान पुण्य और ब्रत नेम और तीर्थ प्रार्थना और जो कुछ करते हो सो अशुद्ध और घिनौना ठहरता है। पाप वुह मरा हुआ कुत्ता है जिस की दुर्गंध से परमेश्वर तुम्हारे सब धर्म्म कर्म्मों से घिनाता है

और जब लों यह मलीनता तुम्हारे मन से दूर न किई जाय तब लों न तुम न तुम्हारा कोई कर्म्म उस के ग्रहण योग्य होगा। फिर जो कोई तुम से कहे कि अपने मन को पवित्र करो तो यह अनहोनी बात है। यह ऐसी व्यर्थ बात है कि मानो कोई आदमी कूए को आज्ञा दे कि उस मलीनता को अपने पास से फेंक। मनुष्य की यही दशा है कि पाप करते करते वुह संपूर्ण रूप से बलहीन बेचारा हो गया है वुह ऐसा निर्बल है कि वुह अपने बचाने के लिये कुछ नहीं कर सक्ता है न तो उस की पूजा न उस का दान न उस की तपस्या कुछ काम आवेगी। वुह दुष्टता में उस पुरुष के समान डूब गया है जो अंधेरी रात में अचेत होके किसी कूए में गिर पड़ा है और जितना अधिक वुह निकलने का परिश्रम करता है उतना ही अधिक कूए की कीचड़

में धंसता जाता है। चिल्लाने को छोड़ वुह अपनी रक्षा के लिये और कुछ नहीं कर सक्ता है तो वुह ऐसा पुकारता है कि जो लोग आस पास रहते सो देखने को दौड़े आते हैं और कोई ऊपर से झुकके उस बेचारे से कहता है कि धीरज धरो हम रस्सी लाके तुम को निकालेंगे। तब वुह रस्सी जलदी से लाता और कूए में लटकाके उस पुरुष से कहता कि पकड़ो और छोड़ो मत। डूबनेवाला दोनों हाथ से पकड़के और उस पर दृढ़ भरोसा रखके रस्सी के द्वारा निकल आता है। जिस ने ऊपर खड़े होके प्रबलता से उस को खींचके निकाला वुही उस का बचानेहार ठहरेगा। सब पापियों की यही दशा है क्षमा मांगने और अपनी मूर्खता का पछतावा करने को छोड़ और वे क्या कर सक्ते हैं। इस पापसागर से अर्थात इस कूए से जिस में गिरा हुआ वुह पुकार रहा है वह कभी अपनी सामर्थ से निकल न सकेगा।

उस की रक्षा के लिये एक रस्सी और एक सामर्थी निकालनेवाला चाहिये वुह रस्सी प्रभु ईसा मसीह है और उस के द्वारा परमेश्वर पापियों को निकालता और अपने पास खींचता है। इसी कारण प्रभु यशु को अपना स्वर्ग सिंहासन छोड़के इस संसार में औतार लेना और हमारे पापों का भार उठाना ज़रूर था जैसा कि वुह रस्सी कूए में पहुंची और उस पर उस डूबनेवाले का सारा बोझ पड़ा। फिर जैसे रस्सी के दो सिरे हैं एक ऊपर एक नीचे अर्थात एक सिरा कूए में और एक सिरा खींचनेवाले के हाथ में वैसाही यशु के दो स्वभाव हैं अर्थात ईश्वरता और मनुष्यता। जो वुह इस रीति मनुष्य और ईश्वर न होता तो वुह ईश्वर और मनुष्य के बीच बिचवई होने के योग्य न होता जो ऊपर ईश्वर को और नीचे मनुष्य को पहुंचता है। परमेश्वर पिता प्रभु यशु मसीह के द्वारा पापियों को अपने पास खींचता है पर चाहिये

कि पापी लोग बिश्वास के हाथ से मसीह को पकड़ लेवें नहीं तो वे बिनाश के कूए से नहीं निकलने पायेंगे। बिना यशु बिचवई की सहा-यता मुक्ति प्राप्त नहीं होती॥

बादी का बचन॥

निःसन्देह ऐसे बहुत बिचवई हुए हैं। यशु आप लोगों के लिये है और हमारे भी बहुत हैं मुसलमानों के लिये मुहम्मद है और सिख लोगों के लिये बाबा नानक और हिन्दूओं के लिये देबी देवता और राम कृष्णादि औतार हैं॥

प्रचारक का बचन॥

नहीं भाई। यह सब बिचवई नहीं हुए और किसी पापी अपराधी के लिये प्रायश्चित्त में अपना प्राण किसी ने नहीं दिया न दे सक्ता था। ये हैं भी नहीं कि तुम्हारे हेतु कुछ उपाय करें फिर जो थे सो आपही पाप के कूए में गिर पड़े थे। जो तुम उस में गिरो और तुम्हारे पीछे होके

मैं भी गिरूं क्या मैं तुम को या तुम मुझ को निकाल सक्ते हो। नहीं यह अनहोनी बात है। सब जितने ऊए आदम के बिगड़े ऊए बंस से उत्पन्न होके और उस के पापी स्वभाव पाके पापही में जनमे। उन की अपवित्रता उन के चरित्रों से प्रगट होती है तुम्हारी पुस्तकों में उन का बर्णन है आप पढ़के अपने लिये बिचार कीजिये॥

चौपाई॥

नारद शिव बिरंचि सनकादी।
जे मुनि नायक आत्मबादी॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही।
को जग काम नचाव न जेही॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा॥
केहिके हृदय क्रोध नहीं दाहा॥

दोहा॥

ज्ञानी तापस शूर कवि कोविद गुन आगार।
केहिके लोभ बिडंबना कीन्ह न इहि संसार॥

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगनयनी के नयन शर को अस लागु न जाहि॥

परन्तु प्रभु यशु मसीह इस बिगड़े हुए वंस से नहीं निकला। ईश्वर का अनादि और अनन्त वचन होकर उस ने अवतार लिया और कुंवारी कन्या से जनित हो वुह मनुष्य का ज़ामिन और मुक्तिदाता और गुरु हुआ। हम तो सब के सब परमेश्वर के ऋणी अर्थात क़रज़दार हैं। कंगाल और निर्बल हो हमारी ऐसी दुर्दशा है जैसी उस की जो किसी महा-जन का क़रज़दार हो जावे और वुह महाजन से कहे कि मेरे यहां मेरी लड़की का व्याह है इस लिये मुझे रुपिया चाहिये और वह सौ रुपिया उधार लेवे और कहे कि बरस दिन में मैं आप का रुपिया व्याज समेत भर देऊंगा। तो रुपिया लेके वुह उन्हें बेअर्थ नाच तमाशे में उड़ा देवे यहां लों कि कौड़ी भी उस के पास न रहे बरस दिन के पाके महाजन अपना

रुपिया मांगे पर बेचारा करज़दार दे न सके और उस को बिनती करके कहे कि हे साहिब धीरज कीजिये मैं सब कमाके भर देऊंगा परंतु महाजन बिलंभ करने न चाहे और कचहरी में उस के नाम पर नालिश करे और ऋणी पकड़ा जाय और आज्ञा होवे कि जब लों कौड़ी कौड़ी न भर देवे बन्दीगृह में रक्खो। पहरुओं के साथ बन्दीगृह को जाते हुए उस का एक धनवान मित्र मार्ग में उसे मिले और बड़ी कृपा करके सारा ब्योरा पूछके कहे कि मैं तुम को बन्दीगृह में जाने न देऊंगा। मैं तुम्हारा ज़ामिन होके तुम्हारे करज़ को आप भर देऊंगा। पहरुए उस को जो ऐसा कहे भला मनुष्य जानके उस के संग हाकिम के पास जा सारा बृत्तांत सुनावें। हाकिम इस बात के बिषय में अचंभित होवे परंतु यह देखकर कि सब रुपिया भर दिये गये हैं करज़दार को छोड़ देवे तो वुह अपने छुटकारा से

आनन्द होवे और अपने मित्र की दया का धन्यवाद कर अपने घर जावे। ईश्वर के सन्मुख यही ठीक हमारी दशा है। हम तो ईश्वर के ऋणी हैं लड़काई से ले हम पाप ही कर रहे हैं। हमारे अपराध गिनती में सिर के बालों से भी अधिक हैं। यों ही हम सहस्रों लाखों के क़रज़दार होते जाते हैं और हमारे पास कुछ भी नहीं है जिस्से भर देवें। जो परमेश्वर चाहता सो हम में नहीं है और जो कुछ हमारे पास है सो उस को अप्रसन्न ठहरता है। वुह न खाता न पीता तो हम उस के लिये क्या चढ़ावें। जो वुह भूखा भी होता तो क्या हम से कुछ कहता क्योंकि सारा अन्न जो हमारे पास खेतों और खत्तों में होवे सो उस ही का है और जंगल मैदानों के जितने जीव जंतु होवें सो सब उस के पाले हुए हैं। जिस वस्तु को हम बहुमूल्य जानते तिस से उस को प्रयोजन नहीं किस लिये कि

पृथिवी का सर्व सोना रूपा रत्न उस ही के हैं और न कोई मोती न कोई हीरा उस से छिपा है तो हम क्यों ऐसी वस्तु उस को चढ़ावें। उन का उस को क्या प्रयोजन है। अब सोचो कि ईश्वर हम से क्या चाहता है। वुह मन की शुद्धता और आज्ञाकारी और पूरा प्रेम चाहता है जैसा पिता उस पुत्र से जो उस की गोद में बैठा है नहीं कहता कि हे पुत्र मुझे खिलाओ और पहिनाओ और मेरी रक्षा करो परंतु आप ही अपने बालक के लिये सब कुछ करता और केवल इतना चाहता है कि बेटा मुझे प्यार करे और मेरी आज्ञाओं को माने और जिस समय पुत्र गले लगाके उसे चूमता वुह बहुत आनन्द होता है वैसा ही ईश्वर मनुष्य के लिये सब कुछ करता और उन्हें धर्मी और प्रेमी और आधीन देखके प्रसन्न होता है। परंतु हम पापी लोग धर्मी नहीं हैं न हम में ईश्वर का प्रेम न उस को

आज्ञाओं की आधीनता पाई जाती है और इसी कारण एक दण्ड की जगह हमारे लिये ठहराई गई है ॥

जब से कि पाप जगत में आया यह संसार मानो हवालात हो गया है और मृत्यु उस का पहरुआ है। उस से कोई भाग नहीं सक्ता है जो कोई कहे कि पूर्व्व को जाके कदाचित मैं काल से बचूं तो देख वहां भी वुह तुम्हारी घात में बैठा है। जो कोई कहे कि पश्चिम को जाऊंगा कदाचित कोई देश वहां हो कि जिस में मृत्यु का कुछ अधिकार न हो तो वहां भी मृत्यु उसे देखती और बचने का ठिकाना कहीं नहीं देख पड़ता है। जो मैं चाहूं कि काल को कुछ अकोर देऊं तो वुह रुपियों को नहीं चाहता न लेता है। वुह न धनवान न कंगाल का कुछ बिचार करता न बूढ़े न जवान पर दया करता है उस की दृष्टि में पुरुष स्त्री दोनों एक समान हैं। मृत्यु ईश्वर

से आज्ञा पाके कभी इस को और कभी उस को तुरंत संसार से एकाएक ले जाता और किसी को जीवन का कुछ ठिकाना नहीं है परंतु जिस रीति बन्दीगृह हवालात से कठिन है तिस रीति नरक इस संसार से बुरा है। उस दण्ड की जगह में लोग क्लेश के मारे चिल्लाते और अपने दांत पीसते हैं कोई तो निरास हो अपनी छाती कूटता है और कोई एक बूंद जल मांगता जिस्से अपनी जीभ को ठण्डा करे पर उन को नहीं मिलता। सब चिल्लाते हैं कि हाय हाय मेरी कैसी मूर्खता। मैं कैसा अभागी हूं। जो मैं उत्पन्न न हुआ होता तो अच्छा होता। लोभ के मारे अपवित्र मन के कारण से और संसार की धन संपत्ति और जस और सुख बिलास की लालसा से मैं ने अपने को सत्यानाश किया। पाप के कारण मैं इस गड़हे में डाला गया हूं। हे प्यारी जो तुम ने कभी किसी को मरते देखा

हो तो तुम को प्रगट हुआ होगा कि मृत्यु को कैसी पीड़ा होती और ऐसी पीड़ा नित्य दुष्टों को नरक में मिलेगी यह दूसरी मृत्यु है और इस जगत की मृत्यु से कहीं भयानक है इस कारण कि उस का अंत कभी न होगा। लोग सदा लों मरते रहेंगे और विनाश की बड़ी अभिलाषा करेंगे पर उन का क्लेश अनंत होगा॥

धर्म्म बिचारक का बचन॥

यह तो बड़ी भयानक दशा है। हे साहिब हम इस दण्ड से किस रीति से बचें सो बताइये॥

प्रचारक का बचन॥

यशु मसीह पर बिश्वास करना छोड़ कोई बचने का मार्ग नहीं है केवल यही उपाय फलदायक है। मसीह पापियों को जगह में आया है। उस ने अपने पिता को बचन दिया कि मैं संसार में जाके दरिद्रता और दीनता

को दशा में औतार लेके मनुष्य के पापें को अपने ऊपर उठाऊंगा और अपना प्राण उन के लिये प्रायश्चित में देऊंगा। इसी बचन के अनुसार उस ने तैंतोस बरस लों इस संसार में रहके जैसा कि हम को करना योग्य था वैसा ही परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को पूरा किया फिर उस ने क्रूस पर चढ़ मृत्यु को सहा जिसतें हम लोगें को नरक की दूसरी मृत्यु से बचावे॥

दोहा ॥

सज्जन को दुखहू दिये दुरजन पूरे आस।
जैसे चंदन कैं घिसे सुन्दर देत सुबास॥

उस ने कहा मैं पापियें का ज़ामिन होऊंगा उन के लिये मैं सब कुछ भर देऊंगा और उस ने ऐसा ही किया भी। अपने बलिदान से उस ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेल करवाया और उस ने यह सब कुछ अपने अत्यंत प्रेम से किया॥

दोहा ॥

गुन सरूप बल द्रव्य कौं प्रीति करै सब कोय।
तुलसी प्रीति सराहिये जु इनतें बाहर होय॥

और इस में परमेश्वर पिता का भी प्रेम प्रगट होता है जैसा लिखा है परमेश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया है कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नाश न होये परंतु अनंत जीवन पावे॥

बादी का बचन॥

यह झूठी बात है। खुदा का कोई बेटा नहीं है। खुदा बेटे से पाक है॥

प्रचारक का बचन॥

क्या तुम्हारा कोई बेटा है॥

बादी का बचन॥

हां खुदा के फज़ल से हमारा एक बेटा है॥

प्रचारक का बचन॥

तो अब हम तुम से पूछते हैं कि जब से

तुम्हारा बेटा पैदा हुआ क्या तुम उस दिन से नापाक हुए। कभी नहीं। इस रीति से तुम सब लोग समझो कि पुत्र के कारण से ईश्वर अपवित्र नहीं हुआ वरन यह मत बिचार करो कि जैसे हम तुम अपनी माता पिता के बालक हैं वैसाही मसीह ईश्वर का पुत्र है। सो नहीं। मसीह परमेश्वर का वुही अनादि बचन है जिस्से सारी सृष्टि रची गई। वुही अपनी सामर्थ से सकल बस्तु को संभालता है। वुही बचन अवतार लेके मनुष्यों के बीच में रहा॥

दोहा॥

अंबर थांभ्यो थंभ बिन धरती अधर धराव।
मनुष्य रूप है अवतर्‍यौ देखत कलि कौ भाव॥

पर वुह ईश्वर का पुत्र इस लिये कहलाता है कि वुह परमेश्वर से निकला और पिता की ईश्वरता में भागी होता है। जो ईश्वरता और मनुष्यता दोनों उस में न होतीं तौ वुह हमारा

बचानेहार नहीं हो सक्ता। जो वुह केवल मनुष्य होता तो पापी होता क्योंकि पाप सब मनुष्यों में लगा है फिर केवल मनुष्य होके वुह परमेश्वर के कोप को सह न सक्ता पर तुरंत उस के नीचे दबके नाश हो जाता। मुक्ति ऐसी भारी बात है कि वुह कभी किसी पुरुष के परिश्रम अथवा तपस्या से प्राप्त नहीं होगी। यह अनमोल मोती केवल ईश्वर के हाथ से मिलता है पर मनुष्य ऐसे मूर्ख हैं कि उस का मोल और महात्मा नहीं जानते हैं। देखो एक बच्चा वहां अपनी मा की गोद में बैठा है। जो मैं उस के साम्हने एक पैसे का खिलौना और एक बहुमूल्य मोती रक्खूं तो मोती को त्याग वुह निश्चय खिलौने को पकड़ लेगा। काहे को। इस लिये कि वुह मोती और खिलौने का अन्तर नहीं जानता है। फिर खिलौना लेके वुह थोड़ी बेर लों खेलेगा जब लों उस के हाथ से गिरके वुह टुकड़े टुकड़े

न हो जाय तब जितना बालक उस्से संतुष्ट था उतना ही उदास होगा। मनुष्य ऐसे बालक के समान है। वुह मुक्ति को बक्रमूल्य पदार्थ नहीं जानता है वुह थोड़े बेर लों इस संसार की धन संपत्ति और सुख विलास से खेलता है पर यह सब वस्तु जल्द इस के हाथों से जाती रहती हैं अंत में मृत्यु उस बेचारे को बुलाती कि महाविचार में खड़ा हो तब वुह कैसा उदास होगा। मनुष्य उस अज्ञान बालक के समान है जो अपनी परछाईं के पीछे दौड़ उस को पकड़ने चाहे पर ज्यों ज्यों वुह दौड़े त्यों त्यों परछाईं आगे बढ़ती जाए निदान वुह ठोकर खाके गिर पड़ता है। यों मनुष्य धन संपत्ति और सुख विलास के पीछे जो निरी परछाईं है दौड़ता है कुछ भी उस के हाथ नहीं आता और अंत को वुह काल से पकड़ा जाता और उस का जीवन निष्फल होता है॥

बादी का बचन ॥

यह बड़े ज्ञान की बातें हैं परंतु हम लोग क्या जानते। हम तो बैल के समान हैं॥

प्रचारक का बचन।

क्या परमेश्वर ने तुम को बुद्धि और समझ नहीं दिई है। तो जान बूझके मूर्खता क्यों करते हो॥ कहते हैं

दोहा ॥

जो करिये सो कीजिये पहिले कर निरधार।
पानी पी घर पूछनौ नाहिन भलो बिचार॥

क्या कोई तुम में से कभी कलकत्ता को गया है। जो कोई गया हो तो देखा होगा कि वहां की नदी का जल प्रतिदिन कई घड़ी लों बढ़ता जाता और फिर कई घंटे लों जल घटता जाता है इस कमती बढ़ती को ज़ुवार भाठा कहते हैं। भला एक लड़की की चर्चा है जो एक समय नदी की बालू पर खेलती

थी और जब थक गई वुह एक सिला पर जो किनारे से कुछ दूर था बैठ गई और उस ने यह बिचार न किया कि जल अब बढ़ने लगा है। यों वुह निश्चिंत हो बैठी रही जब लों नदी उस के पांव तक न आ पहुंची तब कोई भागने का उपाय न देख वुह रोने लगी। रोते रोते निदान जब ज़ल कटि लों आ गया था तब एक मछुवे ने उसे देख नाव में चढ़के लड़की को बचाया। इस लड़की के समान पापी मनुष्य जोखिम की जगहों पर खिलौनों से खेलते और यह नहीं देखते हैं कि परमेश्वर के क्रोध की लहरें बढ़ती जातीं और चारों ओर झुंझलाती हैं और उन्हें सर्बदा के लिये अति पीड़ा और क्लेश में डुबाने चाहती हैं। क्या पापी की ऐसी दुर्दशा में कोई उस पर दया न करेगा। जो वुह पछतावा करके पुकारे क्या कोई उस की बिन्ती न सुनेगा क्या यह अवश्य है कि वुह सदा काल लों घोर नरक में

सत्यानाश होवे। नहीं भाइयो। प्रभु यशु मसीह कृपालु होके बड़ी दया से उस डूबनेवाले पर दृष्टि करता है इस कारण वुह ईश्वर के क्रोध की लहरों के बीच होके हमारी सहायता के लिये आता है वुह सदा कान धर उन की बिन्तियों को सुनता रहता है। अपनी मनुष्यता के नाव पर चढ़के वुह हम डूबनेहार पापियों को बचाता है जबही पापी घोर नरक की अति पीड़ा में गिरने पर है तब प्रभु यशु उस को पकड़के अपनी गोद में रखता और किनारे पर कुशल से पहुंचाता और सर्वदा की आनन्दता में उसे प्रवेश कराता है। निदान हे प्यारो पश्चात्ताप करो और प्रभु यशु मसीह पर विश्वास करो कि और कोई तुम को नहीं बचा सक्ता है। अपने धर्म्म कर्म्म पर भरोसा न रखना। उन से तुम को मुक्ति नहीं हो सक्ती। जब तुम किसी राजा को भेंट करने जाओ क्या तुम नारंगी दाड़िम बादाम किश-

मिश्र मिठाई को मैली टूटी टोकरी में लेके जाओगे। कभी नहीं। और ऐसेही ईश्वर भी उन कामों से जो अशुद्ध मन से निकलते हैं संतुष्ट न होगा। जो तुम अपने फल मिठाई को शुद्ध पीतल के थाल में रखो तो क्या राजा उन से घिन करेगा योंहीं जब प्रभु यशु मसीह पहिले तुम्हारे अशुद्ध मनों को पवित्र करे तब परमेश्वर तुम्हारे धर्म्म कर्म्म और आराधना को ग्रहण करेगा॥

चौपाई॥

मन है मन्दिर ईश्वर भाई।
ता बिच राखहु अति परछाई॥
तब देखहु तुम ज्योति प्रकासा।
होय जाय भव भ्रम तम नासा॥

ईश्वर के महा कोप से अचेत मत हो। पाप के आनेवाले दण्ड से भागो। बिलंभ करने में बड़ी जोखिम है॥

दोहा ।

प्रान तृषातुर के रहै थोरे ऊ जल दान।
पाछे जल भर सहस घट डारे मिलत न प्रान॥

यहां तुम्हारे भाईबंद बिरादरी हैं पर वहां कौन तुम्हारा कुशल क्षेम पूछेगा। नरक में जहां पापी लोग अग्नि में तड़पते हैं कौन जल पिलाके तुम्हारी जीभ को सीतल करेगा। अब हां पश्चात्ताप और मुक्ति खोजने का समय है॥

दोहा ॥

दुख में सुमरन सब करें सुख में करें न कोइ।
सुख में जो सुमिरन करें तो दुख काहे होइ॥

हम ईसाई लोग इस लिये धर्म्म उपदेश देके तुम्हें समझाते हैं और मसीह का मंगलसमाचार सुनाते हैं जिसतें तुम ईश्वर की आज्ञा मानके और सत्य मुक्तिदाता को प्यार करके इस भयानक जगह से बचो और तुम से हमारी यह बिन्ती है कि इन बातों को सुमिरण करके

विचार करो और परमेश्वर सर्वदा अपना आशीर्बाद तुम्हें देवे ॥

चौपाई ॥

ईश्वर ने निज कृपा दिखाई ।
जग हित लागि मुक्ति ठहराई ॥
ईश्वर पुत्र मसीह अवतरेउ ।
पापिन के हित अति दुख सहेउ ॥
जो नर निज चाहें कल्याणहि ।
हिय बिश्वास तासु पर आनहि ॥
बंधु प्रतीत मसीह पर ठानऊ ।
आत्मा कुलतारक का आनऊ ॥
तब दुःख पाप नरक सें बचिहो ।
सदा स्वर्ग में हर्षित बसिहो ॥

धर्म्म वार्त्ता पत्र समाप्त ॥

भजन ॥

जिन परतीत यिशूपर नाहीं :
कस पावें भव पारा हो ॥
ज्ञानी पण्डित जित जग भयेउ :
डूब गये यहि धारा हो।
ईश्वर बचन अनादि अनन्ता :
सोई देत सहारा हो ॥
सरग छोड़ जगमें प्रभु आयो :
मेघ जहां अंधियारा हो।
जननी गर्भ मनुज तन धारा :
सकल सृष्टि करतारा हो ॥
नर सब भूले भेड़ समाना :
जिनका नहि रखवारा हो।
तिनको यीशु महा सुख दीन्हा :
दुःख सहि कीन्ह उधारा हो ॥
दास करे कहं लग परसंसा :
प्रेम अमित बिस्तारा हो।
आवो सब मिलि प्यारो भाई :
संत गहो निस्तारा हो ॥